डॉ॰ अर्जुन गणपति चव्हाण
अधिव्याख्याता,
हिन्दी विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर॰

प्रमाणपत्र

मैं प्रमाणित करता हूँ कि श्री॰प्रकाश वसंतराव ताकभाते ने मेरे निर्देशन में "रमेश बक्षी के नाटकों में चित्रित स्त्री-पुरुष सम्बन्ध" लघु शोध-प्रबन्ध शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम्॰फिल॰ (हिन्दी) उपाधि के लिए सफलता पूर्वक और पूरे परिश्रम के साथ लिखा है। यह उनकी मौलिक रचना हैं। जो तथ्य इस लघु शोध-प्रबन्ध में प्रस्तुत किए गए हैं, मेरी जानकारी के अनुसार सही हैं। शोध-छात्र के प्रस्तुत शोध-कार्य के बारे में मैं पूरी तरह से संतुष्ट हूँ।

कोल्हापुर
दिनांक - 29 जून, 1996

डॉ॰ अर्जुन गणपति चव्हाण
शोध-निर्देशक

प्रस्थापन

यह लघु शोध-प्रबन्ध मेरी मौलिक रचना है, जो शिवाजी विश्वविद्यालय, कोल्हापुर की एम्·फिल· हिन्दी उपाधि के लिए प्रस्तुत की जा रही है। यह रचना इससे पहले इस विश्वविद्यालय या अन्य किसी भी विश्वविद्यालय की किसी भी उपाधि के लिए प्रस्तुत नहीं की गई हैं।

श्री· प्रकाश वसंतराव ताकभाते
शोध-छात्र

कोल्हापुर
दिनांक : 29 जून 1996

संस्तुति-पत्र

मैं संस्तुति करता हूँ कि इस लघु शोध-प्रबन्ध को परीक्षण हेतु अग्रेषित किया जाए।

कोल्हापुर
दिनांक :- 29 JUN 1996

अध्यक्ष,
हिन्दी - विभाग,
शिवाजी विश्वविद्यालय,
कोल्हापुर

प्राक्कथन

रमेश बक्षी आधुनिक हिन्दी साहित्य के एक प्रयोगधर्मी रचनाकार रहे हैं। बेहद संवेदनशील, हँसमुख, अन्तर्मुख तथा खुले स्वभाव वाले बक्षी जी का व्यक्तिगत जीवन तनाव, टूटन और बिखराव से भरा हुआ है, यही तनाव, टूटन और बिखराव उनके साहित्य में प्रतिबिम्बित है। उनका व्यक्तित्व और साहित्य दोनों चर्चा के विषय रहे हैं, परन्तु उसके संदर्भ में अनुकूल से अधिक बातें ही कही गई हैं। उन्होंने जो जिया जो भोगा, वही दुराग्रहरहित दृष्टि से लिखा, परंतु सम्यक् आलोचना के अभाव में वे उपेक्षित-से रहे। उनकी प्रतिभा बहुमुखी थी। कहानी, उपन्यास, नाटक व्यंग्य, छोटे-नाटक, बाल-साहित्य, पत्रकारिता, फिल्म आदि के क्षेत्र में उन्होंने कुशलता से लेखनी चलाई है, परन्तु उनके नाटक ही अधिक विवादास्पद रहे। वर्तमान काल में स्त्री-पुरुष सम्बन्धों में आए परिवर्तन को उन्होंने अपने नाटकों में विशेष रूप से चित्रित किया है।

वस्तुतः स्त्री-पुरुष सम्बन्ध सभी मानवीय सम्बन्धों का आधार है। यह सम्बन्ध प्राकृतिक, अनादि और चिरन्तन है। समाज ने विवाह-संस्था का निर्माण कर स्त्री-पुरुष सम्बन्धों पर बहुत दिनों तक नियंत्रण रखा, परन्तु आधुनिक काल में अनेक कारणो से स्त्री-पुरुष की मानसिकता में भी बदलाव आया। परम्परागत आदर्श और धारणाएँ बदल गयीं। नये मूल्य स्थापित हुए । इस परिवर्तन को जिन हिन्दी नाटककारों ने बड़ी बारीकियों के साथ चित्रित किया है, उनमें रमेश बक्षी का स्थान महत्वपूर्ण है। बक्षी जी के नाटकों में चित्रित स्त्री-पुरुष सम्बन्धों के विविध आयामों का विवेचन करना प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबन्ध का उद्देश्य है।

प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबन्ध चार अध्यायों में विभाजित है -

प्रथम अध्याय : प्रस्तुत अध्याय का शीर्षक "रमेश बक्षी : व्यक्तित्व और कृतित्व" है, जिसके अन्तर्गत रमेश बक्षी के बाह्य और आन्तरिक व्यक्तित्व के साथ साहित्य, पत्रकारिता, फिल्म, नाटय-मंचन आदि क्षेत्रों में बक्षी जी द्वारा दिए गए योगदान का विवेचन किया गया है। अन्त में उपलब्ध तथ्यों के निष्कर्ष दिए गए हैं।

द्वितीय अध्याय : प्रस्तुत अध्याय "रमेश बक्षी का नाटयसाहित्य" शीर्षक से अभिहित है, जिसमें बक्षी जी के नाटकों का विवेचन – कथावस्तु और शिल्प - दोनों दृष्टियों से किया गया है। अन्त में उपलब्ध तथ्यों के निष्कर्ष दिए गए हैं।

तृतीय अध्याय : इस अध्याय का शीर्षक है - "हिन्दी नाटकों में स्त्री-पुरूष सम्बन्ध चित्रण की परम्परा"। प्रस्तुत अध्याय में भारतेन्दु युग से लेकर सन 1960 ई॰ तक के हिन्दी नाटकों में चित्रित स्त्री-पुरूष सम्बन्धों के विविध आयामों, जैस सामान्य वैवाहिक जीवन, विवाह-पूर्व प्रेम और यौन सम्बन्ध, विवाहोत्तर प्रेम और यौन सम्बन्ध, वेश्या जीवन आदि का विवेचन विश्लेषण किया गया है। अन्त में उपलब्ध तथ्यों के निष्कर्ष दिए गए हैं।

रमेश बक्षी साठोत्तरी काल खण्ड के नाटककार है। अतः सन 1960 के पश्चात के हिन्दी नाटकों में चित्रित स्त्री-पुरूष सम्बन्ध चित्रण की परम्परा का विवेचन अगले अध्याय में किया गया है।

चतुर्थ अध्याय : "रमेश बक्षी के नाटकों में चित्रित स्त्री-पुरूष सम्बन्ध" शीर्षक से अभिहित प्रस्तुत अध्याय प्रस्तुत शोध-कार्य का केद्र-बिन्दु है। इस अध्याय में प्रथमतः रमेश बक्षी के नाटकों में चित्रित स्त्री-पुरूष सम्बन्धों के विविध पहलुओं पर विचार किया गया है और अध्ययन के उपरान्त प्राप्त निष्कर्ष दिए गये हैं।

उसके पश्चात रमेश बक्षी के समकालीन हिन्दी नाटककारों के नाटकों में चित्रित स्त्री-पुरूष सम्बन्धों के विविध आयामों का विवेचन-विश्लेषण किया गया है और प्राप्त निष्कर्ष दिए गए हैं।

स्त्री-पुरुष सम्बन्ध चित्रण के संदर्भ में समकालीन हिन्दी नाटककारों के नाटकों से रमेश बक्षी के नाटकों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करके प्राप्त निष्कर्ष अन्त में दिए गए हैं।

उपसंहार :- उपसंहार में पूर्व विवेचित अध्यायों के वैज्ञानिक पध्दति से निकाले गए निष्कर्ष दर्ज है। ये निष्कर्ष प्राप्त तथ्यों के आधार पर निकाले गये हैं।

अन्त में आधार भूत ग्रन्थों तथा संदर्भ-ग्रन्थों की सूची दी गई है।

लघु-शोध-प्रबन्ध की मौलिकता :-

1. रमेश बक्षी हिन्दी साहित्य के साठोत्तरी कालखण्ड के एक महत्वपूर्ण नाटककार होते हुए भी उचित समीक्षा के अभाव में वे उपेक्षित-से रहे हैं। प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबन्ध में रमेश बक्षी के व्यक्तित्व और कृतित्व पर यथोचित प्रकाश डाला गया है।

2. कथ्य, शिल्प, शैली तथा मंचीयता की दृष्टि से रमेश बक्षी के नाटक महत्वपूर्ण हैं, इसलिए उनके नाटकों के कथ्य और शिल्प का विस्तृत विवेचन-विश्लेषण इस लघु शोध-प्रबन्ध में प्रस्तुत किया गया है।

3. वर्तमान काल में युगीन-परिवेश के साथे परिवर्तित स्त्री-पुरुष सम्बन्धों का चित्रण करनेवाले साठोत्तरी हिन्दी नाटककारों के नाटकों के साथ रमेश बक्षी के नाटकों का तुलनात्मक अध्ययन प्रबन्ध में प्रस्तुत किया गया है।

4. साहित्य के साथ ही साथ पत्रकारिता, फिल्म, नाटय-मंचन और नाटय-निर्देशन के तथा नुक्कड नाटक के प्रचार कार्य के क्षेत्र में बक्षी जी द्वारा दिए गए योगदान पर प्रस्तुत प्रबन्ध यथोचित प्रकाश डालता है।

5. रमेश बक्षी जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी होते होते हुए भी उनके साहित्य पर अभी तर शोध-कार्य नहीं हुआ है। प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबन्ध इस कमी को पूरा करने का विनम्र परन्तु प्रामाणिक प्रयास है।

कृतज्ञता ज्ञापन :-

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध डॉ. अर्जुन चव्हाण, अधिव्याख्याता, शिवाजी विश्व-विद्यालय, कोल्हापुर के आत्मीय निर्देशन में लिखा है। उन्हें गुरू कहूं या मित्र, समझ में नहीं आता, क्यों कि मेरे लिए वे मित्र से अधिक गुरू हैं और गुरू से बढ़कर मित्र। फिर भी इतना अवश्य, कि प्रस्तुत लघु शोध-प्रबन्ध की पूर्ति का सारा श्रेय उनके आग्रह और मार्गदर्शन का प्रतिफलन है। अपने कार्य में व्यस्त होने के बावजूद भी उन्होंने जिस तत्परता और आत्मीयता से मौलिक मार्गदर्शन किया है, उसके प्रति शब्दों में आभार व्यक्त करना कृतघ्नता होगी। मैं अपने गुरू और दोस्त का ऋणी रहने में ही धन्यता अनुभव करूँगा।

मेरी शिक्षा-दीक्षा तथा प्रस्तुत शोध-कार्य की पूर्ति के लिए मेरे आदर्शवादी पिताजी के. वसंतराव ताकभाते, बुआजी के.चतुराबाई कालजे तथा माता गंगु तथा शान्ताबाई के आशीर्वाद जो मुझे नित्य सत्कर्म की प्रेरणा देते रहे हैं, विशेष उपयोगी साबित हुए हैं। मेरे विद्यार्थी-जीवन में मामाजी श्री.नामदेवराव जगदाले तथा श्री.मुरलीधर जगदाले का मुझे विशेष सहयोग प्राप्त हुआ। अतः यहाँ उनका स्मरण अप्रासंगिक न होगा।

मैं ऋणी हूँ "रयत शिक्षण संस्था" का, जिसने एम्.फिल. की उपाधि के लिए मुझे अपने कार्य से एक वर्ष का अवकाश "अध्ययन और लेखन" के लिए दिया। इस संदर्भ में मुझे पंढरपूर महाविद्यालय के तत्कालीन प्राचार्य आर.के.शिंदे तथा मेरे बंधु तुल्य मित्र प्रा.विलास औताडे का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ। उनका मैं ऋणी हूँ।

मै असीम कृतज्ञ हूँ आदरणीय डॉ·गजानन सुर्वे जी, डॉ·वसन्तराव मोरे जी, डॉ·पी·जी·पाटील जी, डॉ·सुनीलकुमार लवटे जी, प्रा· शरद कणबरकर जी, प्राचार्य बी·बी· पाटील जी,प्रा· तिवले जी, प्रा· शहा जी, प्रा·कु·भागवत जी का, जिन्होंने प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप में मुझे इस शोध-कार्य के लिए प्रेरणा और प्रोत्साहन दिया।

अपनी धर्मपत्नी सौ·सुनिता के बारे में क्या कहूँ ?इस शोध कार्य के दौरान गृहस्थी का सारा बोझ अपने सिर पर उठा कर वह प्रेरणादायी प्रेयसी की भूमिका भी निभाती रही। मैं उसे धन्यवाद देता हूँ। मेरे पुत्र चि·प्रणवकुमार तथा कन्या कु· प्राची को भी मैं धन्यवाद देना चाहता हूँ कि लाड-प्यार में पले होते हुए भी उन्होंने शोध-कार्य की पूर्ति के दिनों में मुझे हमेशा की तरह परेशान नहीं किया। बहनें कु·सुरेखा, सौ· आशा तथा सौ·जयप्रभा ने भी यथाशक्ति सहयोग दिया।

शिवाजी विश्व-विद्यालय के सहायक कुलसचिव श्री· मारूलकर तथा श्री·आर·जी· देसाई जी का मैं विशेष आभारी हूँ। इस शोध-कार्य के दौरान मुझे अपने मित्र प्रा·जयवन्त जाधव, प्रा·अर्जुन नवले, प्रा·आनंदाराव खटकाले तथा श्री·गोवर्धन घाडगे, श्री·हरिदास मेरड तथा बंधुतुल्य श्री· चांगदेव ताकभाते श्री·चन्द्रकान्त काकडे , शिष्य रतिलाल लोंढे का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ। अतः वे सब धन्यवाद के पात्र हैं।

मैं विशेष रूप से आभारी हूँ रमेश बक्षी जी की सहधर्मचारिणी श्रीमती अलका बक्षी जी का , जिन्होंने इस शोध-कार्य को पूरा करने में मुझे बक्षी जी अनुपलब्ध पुस्तकें देकर सहयोग दिया। इस शोध कार्य को पूरा करने में मुझे जिन ग्रन्थों का प्रत्यक्ष-परोक्ष सहयोग मिला है, उन ग्रन्थों के विव्दान लेखकों का भी मैं ऋणी हूँ। आत्मीयता और तत्परता से सुचारू रूप से प्रबन्ध का टंकण करने वाले मे·रिलॅक्स सायक्लोस्टायलिंग, सातारा के श्री·मुकुन्द ढवले तथा उनके सहयोगी श्री·राजु कुलकर्णी तथा श्री·सुशीलकुमार कांबले का नामोल्लेख करना मुझे यहाँ अनिवार्य

लगता है। अन्त में इस कार्य को सम्पन्न बनाने में जिनका प्रत्यक्ष एवं परोक्ष सहयोग प्राप्त हुआ है, उन सब का आभार मानकर मैं इस लघु शोध-प्रबन्ध को परीक्षणार्थ विद्वानों के सामने विनम्रता से प्रस्तुत करता हूँ।

कोल्हापुर
दिनांक : 29 जून 1981

श्री॰ प्रकाश ताकभाते
अधिव्याख्याता एवं अध्यक्ष,
हिन्दी विभाग,
कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय,
माढा, जि॰ सोलापुर॰

अ नु क्र म णि का

प्रथम अध्याय : रमेश बक्षी : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

1·1 रमेश बक्षी का व्यक्तित्व

1·1·1 बाह्य व्यक्तित्व

1·1·1·1 जन्म तथा संस्कार

1·1·1·2 शिक्षा

1·1·1·3 विवाह तथा पारिवरिक जीवन

1·1·1·4 व्यवसाय तथा नौकरियाँ

1·1·1·5 वैयक्तिक रूचियाँ

1·1·1·6 दोस्त

1·1·1·7 प्रभाव

1·1·1·8 भाषा-ज्ञान

1·1·1·9 यात्राएँ

1·1·1·10 सम्मान तथा पुरस्कार

1·1·1·11 बीमारी और मृत्यु

1·1·2 आन्तरिक व्यक्तित्व

1·2 रमेश बक्षी का कृतित्व

1·2·1 रचनाएँ

1·2·2 पत्रकारिता

1·2·3 नाटक : अभिनय, मंचन और निर्देशन

1·2·4 फिल्म

1·2·5 दूरदर्शन

निष्कर्ष

द्वितीय अध्याय : रमेश बक्षी का नाटय-साहित्य

2·1 कसे हुए तार

2·1·1 कथावस्तु

2·1·2 शिल्प

2·1·2·1 वस्तु योजना

2·1·2·2 पात्र योजना

2·1·2·3 संवाद योजना

2·1·2·4 भाषा शैली

2·1·2·5 गीत एवं संगीत योजना

2·1·2·6 प्रकाश योजना

2·1·2·7 प्रतीक योजना

2·1·2·8 मंच-सज्जा

2·1·2·9 पात्रों के क्रिया व्यापार हेतु नाटय-निर्देश

2·2 देवयानी का कहना है

2·2·1 कथावस्तु

2·2·2 शिल्प

2·2·2·1 वस्तु योजना

2·2·2·2 पात्र योजना

2·2·2·3 संवाद योजना

2·2·2·4 भाषा शैली

2·2·2·5 गीत एवं संगीत योजना

2·2·2·6 प्रकाश योजना

2·2·2·7 प्रतीक योजना

2·2·2·8 मंच-सज्जा

2·2·2·9 पात्रों के क्रिया व्यापार हेतु नाटय-निर्देश

2·3 तीसरा हाथी

2·3·1 कथावस्तु

2·3·2 शिल्प

2·3·2·1 वस्तु योजना

2·3·2·2 पात्र योजना

2·3·2·3 संवाद योजना

2·3·2·4 भाषा शैली

2·3·2·5 गीत एवं संगीत योजना

2·3·2·6 प्रकाश योजना

2·3·2·7 प्रतीक योजना

2·3·2·8 मंच-सज्जा

2·3·2·9 पात्रों के क्रिया व्यापार हेतु नाटय - निर्देश

2·4 वामाचार

2·4·1 कथावस्तु

2·4·2 शिल्प

2·4·2·1 वस्तु योजना

2·4·2·2 पात्र योजना

2·4·2·3 संवाद योजना

2·4·2·4 भाषा शैली

2·4·2·5 गीत एवं संगीत योजना

2·4·2·6 प्रकाश योजना

2·4·2·7 प्रतीक योजना

2·4·2·8 मंच सज्जा

2·4·2·9 पात्रों के क्रिया व्यापार हेतु नाटय-निर्देश

निष्कर्ष

तृतीय अध्याय : हिन्दी नाटकों में स्त्री-पुरूष सम्बन्ध चित्रण की परम्परा

काम शब्द का अर्थ, काम शब्द की परिभाषा, निष्कर्ष ।

मानव सभ्यता का विकास और स्त्री-पुरूष सम्बन्ध ।

1· प्राचीन काल 2· मध्यकाल 3· आधुनिक काल

3·1 भारतेन्दु-युगीन हिन्दी नाटकों में चित्रित स्त्री-पुरूष सम्बन्ध ।

3·1·1 भारतेन्दु कालीन हिन्दी नाटकों मे चित्रित सामान्य वैवाहिक जीवन

3·1·1·1 अभिभावकों व्दारा निश्चित विवाहों का वर्णन

3·1·1·2 प्रेम-विवाहों का वर्णन

3·1·2 भारतेन्दुकालीन हिन्दी नाटकों में चित्रित विवाह-पूर्व प्रेम और यौन-सम्बन्ध

3·1·3 भारतेन्दु कालीन हिन्दी नाटकों मे चित्रित विवाहोत्तर प्रेम और यौन सम्बन्ध

3·1·4 भारतेन्दु कालीन हिन्दी नाटकों में चित्रित वेश्या-जीवन

निष्कर्ष

3·2 प्रसाद कालीन हिन्दी-नाटकों में चित्रित स्त्री-पुरूष सम्बन्ध

3·2·1 प्रसाद युगीन हिन्दी-नाटकों में चित्रित सामान्य वैवाहिक जीवन

3·2·2 प्रसाद युगीन हिन्दी-नाटकों में चित्रित विवाह-पूर्व प्रेम और यौन सम्बन्ध

3·2·3 प्रसाद युगीन हिन्दी-नाटकों में चित्रित विवाहोत्तर प्रेम और यौन सम्बन्ध

3·2·4 प्रसाद युगीन हिन्दी नाटकों में चित्रित वेश्या-जीवन

निष्कर्ष

3·3 प्रसादोत्तर हिन्दी-नाटकों में चित्रित स्त्री-पुरूष सम्बन्ध

3·3·1 प्रसादोत्तर हिन्दी नाटकों में चित्रित सामान्य वैवाहिक जीवन

3·3·2 प्रसादोत्तर हिन्दी-नाटकों मे चित्रित विवाह-पूर्व प्रेम और यौन सम्बन्ध

3·3·3 प्रसादोत्तर हिन्दी-नाटकों में चित्रित विवाहोत्तर प्रेम और यौन- सम्बन्ध

3·3·4 प्रसादोत्तर हिन्दी नाटकों में चित्रित वेश्या-जीवन

निष्कर्ष

3·4 स्वातंत्र्योत्तर (सन साठ तक के) हिन्दी नाटकों में चित्रित स्त्री-पुरूष संम्बन्ध

3·4·1 स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाटकों में चित्रित सामान्य वैवाहिक जीवन

3·4·2 स्वातेन्त्र्योत्तर हिन्दी नाटकों में चित्रित· विवाह पूर्व प्रेम और यौन-सम्बन्ध

3·4·3 स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाटकों में चित्रित विवाहोत्तर प्रेम और यौन· सम्बन्ध

3·4·4 स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाटकों में चित्रित वेश्या-जीवन

निष्कर्ष

चतुर्थ अध्याय : रमेश बक्षी के नाटकों मे चित्रित स्त्री-पुरूष सम्बन्ध

4·1 रमेश बक्षी के नाटकों में चित्रित स्त्री-पुरूष सम्बन्ध

4·1·1 रमेश बक्षी के नाटकों में चित्रित सामान्य वैवाहिक जीवन

4·1·2 विवाह-पूर्व प्रेम और यौन-सम्बन्ध

4·1·3 विवाहोत्तर प्रेम और यौन-सम्बन्ध

4·1·4 वेश्या-जीवन का चित्रण

4·2 रमेश बक्षी के समकालीन हिन्दी नाटककारों के नाटकों में चित्रित स्त्री-पुरुष सम्बन्ध

4·2·1 सामान्य वैवाहिक जीवन का चित्रण

4·2·2 विवाह-पूर्व प्रेम और यौन-सम्बन्ध का चित्रण

4·2·3 विवाहोत्तर प्रेम और यौन-सम्बन्ध का चित्रण

4·2·4 वेश्या जीवन का चित्रण

निष्कर्ष

रमेश बक्षी और उनके समकालीन नाटककारों के नाटकों में चित्रित स्त्री पुरुष सम्बन्ध : एक तुलनात्मक अध्ययन

उपसंहार

संदर्भ-ग्रंथ-सूची